अनुक्रमणिका

ॐ

श्रीमच्चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः

श्री शील रत्न सार संग्रह

मंगलाचरण

अर्हंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय
सर्व साधुभ्यो नमः।

दोहा

अरिहन्ता अरिहन्तजी, सिद्ध ऋद्धि दातार।
आचारज उवझाय मुनि-राज वंश उरधार ॥

साखे रे। धन धन साधु वैरागी ॥१॥ नारी इकेलीसुं वात न करीये। तिणसेती निश्चय डरिये रे। धन०॥ २ ॥ धर्म कथा न कहे तिण आगे। जिण दिठां मन मद जागेरे। धन० ॥ ३ ॥ कोई नर नारी दृष्टी आवे तो, आंगुलीयां दिखलावेरे। धन० ॥ ४ ॥ दोषी दुर्जनके निजरां आवे। तो शील कलंक चढ़ावेरे। धन० ॥ ५ ॥ वनिता (स्त्रीना) वचने रतिपति खोभे. इम संजम नहीं सोभेरे। धन० ॥ ६ ॥ पात भड़े पवन प्रसंगे। तो शील तणो व्रत भंगेरे। धन० ॥ ७ ॥ मनमें जाणे हूं शीले साचो। पिण जग सहु मांने काचोरे। धन० ॥८॥ नीव दूर थकी जे निरखी। ए तो रसना स्वाद ले परखीरे। धन० ॥ ६ ॥ दीपक देख पतंग्या झंपे। तिम नारीसु ब्रह्मचारी कंपे रे। धन० ॥१०॥ इण दृष्टान्ते थे ब्रह्मचारी। थे तो वस्तीमें रहिजो वीचारीरे। धन० ॥११॥ वीजी वाड़ इण पर राखे। अगरचन्द मुनि भाखे रे। धन०॥१२॥

हो, श्रीजिन, जिहां तिहां वेसे नार। मुहूर्त्त एक तिहां लगे हो, श्रीजिन, नहीं वेसे ब्रह्मचार, श्रीजिन, सां० ॥४॥ पुत्री पट वर्षा तणी हो, श्रीजिन, ते पिण सेज्यारे मांय। इम जाणी सेवे नहीं हो, श्रीजिन, नारीनो आसन ताम, श्रीजिन, सां० ॥५॥ आसन सेव्यां नारनो हो श्रीजिन, भाजो शील अखंड। कवड़ी सटे नहीं वेचीये हो, श्रीजिन, गुण मणी रत्न करंड, श्रीजिन, सां० ॥६॥ आसण फरस्यां एवड़ा हो, श्रीजिन, बोले दोष भगवंत। ते काया फरसे जे नरा हो, श्रीजिन, चिहुं गत मांहि भमंत, श्री जिन, सां० ॥ ७ ॥ तिणथी आसन छोडदो हो, श्रीजिन, जो राखो तुम शील। कर्म कटक बहु भांजना हो, श्रीजिन, लेसो अनुक्रमे लील, श्रीजिन, सां० ॥ ८ ॥ रमणी केरे बेसणा हो, श्रीजिन, नहीं वेसे गुणवंत। बिगड़े ब्रह्मचर्य माटको हो, श्रीजिन, दूधमें लूणनो दृष्टान्त, श्रीजिन, सां० ॥६॥ स्फटिक रत्न जिस निर्मलो

कामण फेरा रे काम कटकने, मत जोइजो रे कोय । भंड कुचेष्टा रे निरखत खिणे, भांजे शील अमोल ॥ धन० ॥ २ ॥ चिहुं गत रूपी रे कूंपजगतनें, रमंणी विषय विकार । रत्न अमोलक भाजे नेहथी- निरख्यां नेंप दीदार । धन० ॥३॥ कामण फेरा शास्त्र विनोदरा, नहीं वांचीजे ब्रह्मचार । शीलरतनग रे जो तुमे लालची- विषिया विषय निवार । धन० ॥४॥ जिम कोई पंथीरे चाल्यो मारगे, मिलियो तसकर आय । धन कंचणरे मूल गमायने, पंथी निर्धन थाय । धन० ॥५॥ जिम ब्रह्मचारी रे शिवपुर पंथीयो, भरीयो शील तणो धन माल । कामण रूपी रे तसकर आय मिल्यां, दीयो शील लुंटाय । धन० ॥६॥ जिम कोट अंधक देश वन्दन करी, दिनकर (सूर्य) सांमो मती जोय । पटल नणो दुख भांजसी, लोचन निर्मल होय । धन० ॥ ७ ॥ वेद प्रकासे हो दिनकर देखीयो, फिर सांमो मती जोय । वचन न मान्यो सांमो

चाप कवंरजी। एदेशी॥ चोमुख सिंहासन थयो, चमर ढोले चोसठ इन्द, सोभागी। भामंडल पुठे भलो. वेठा वीरजिणंद, सोभागी, सुन्दर व्रत चोथो कह्यो॥ ए टेर॥१॥ पांचमी वाड़ जिनेसरू, इम भाखें वचन रसाल सोभागी। अमृत वाणी उच्चरे, गुंथे भविक लोक गुणमाल. सो० सुं०॥२॥ कामण केरा गीतने, नहीं सुणे चित्त लगाय, सो०। नारी मिले वहु एकठी, नहीं निरखे कौतक जाय. सो० सुं० ॥३॥ हसे रमे क्रीडा करे, गावे गालने गीत, सो० तिहां न वसे ब्रह्मचारिजी, ब्रह्मचारीनी आड़ छे रीत, सो० सुं० ॥४॥ रुदन करे हांसी करे, बोले नेहादिकना बोल, सो० शीलवंत नहीं सांभले. तिहां चंचल हुवे मन. सो० सु० ॥ ५ ॥ नहीं सुणे नारी तणा. रुड़ा रिम झिम नेवर नाद. सो० सुणता तनखिण उपजे. वहु मदन तणो उदमाद. सो० सुं ॥ ६॥ नर नारी रजनी समे, बोले नेहादिकना वचन, सो०। शीलवंत नहीं

ढाल छट्ठी।

पद्मणी बोले वीरा बादलारे ॥ ए देशी ॥ छट्ठी वाड़ शिरोमणीरे. गुणमणी रयण विशेष हो। सिद्धारथ तसु सुन्दरूजी. इणपर दे उपदेश हो। वीर जिणंद इम उच्चरेजी. बारे परखदा मझार हो ॥ १ ॥ ए टेर ॥ पूरव भोग नहीं चिन्तवेजी. चिन्तवीयां दुख थाय हो। शील रत्नका लालचीजी, विकथा न आणो मन माय हो। वी० ॥ २॥ क्या मुझ सुखनी सुन्दरीजी, क्या मुज सखरी सेज हो। क्या मंदिर क्या मालीयाजी, इम मती चिन्तवो एज हो। वी० ॥ ३ ॥ आगे हुं करतो रंगसुं जी, कड़ा भोग विलास हो। हिवे इणपर कसुं जी. नहीं मुझ रमणी पास हो वी० ॥४॥ इन मती चिन्तवो पृठलाजी. भोगवीया कोई भोग हो। मन मद गाच चिन्तव्यांजी. कड़ा न फेली लाग हो। वी० ॥ ५ ॥

वीर जिणंद वखाणी हो । अगरचन्द इण पर भाखे, सूत्रनो मर्म पीछाणी हो । सु० ॥ ११ ॥

दोहा ।

जगत शिरोमण सायबो, सिद्धारथनो नंद ।
आठमी वाड इम उच्चरे, सुणाता अमृत कंद ।१।

ढाल आठमी

उंची चढ़ देखुं हो लुगायांरो टोलो आवतो ॥ एदेशी ॥ त्रिसलादेरा नन्दन हो स्वामीजी त्रिगड़े बेसने, इणपर दे उपदेश । निर्मल राखो हो वैरागी वाड़ आठमी, पामो सुख विशेष । त्रि० ॥१॥ अति घणों भोजन हो सुज्ञानी साधु मती करो, इम नहीं पलसी शील । अल्प आहारे हो साधुजी सुख पामसो, करसो शिवपुर लील । त्रि०॥२॥ अति आहार हो साधुजी व्रत भांजसो, सुपनेमें थासो अशुद्ध । इम विचारो हो अति

बिगाड़ । त्रि० ॥६॥ ने वेपारीने हो माये भूख चहु थयो, पिछतावे अणपार । ओढण थोड़ो हो मूर्ख इम किम सुवे, लाम्बा पांव पसार ॥ त्रि० ॥१०॥ अल्प आहारे हो सुख पावे जीवड़ो, नहीं हुवे रोग विकार । व्रत पण सेंठो हो थावे गुणवन्तजी, वेगा उतरसो पार । त्रि० ॥ ११ ॥ इण दृष्टांते हो राखो वाड़ आठमी, जे नर चतुर सुजान । अगरचन्द हो भाखे रूड़ी देशना, हिवे नवमी वाड उच्चार ॥ त्रि० ॥ १२ ॥

दोहा ।

जग मंडल जिनराजीयो, सांचो परम दयाल ।
नवमी वाड़ इम उच्चरे, षट जीवां प्रतिपाल ॥१॥

ढाल नवमी ।

फासु पाणी पीयो चारो चरो, बेठो ठंडी छांय हो ॥ ए देशी ॥ हिवे श्री वीर जिणंदजी, गुण-

धन० ७ ॥ संठाणा में समचोरस मोटो, ध्यान शुक्ल वड़ धीररी माइ। पांच ज्ञानमें केवल मोटो, शीलव्रत शूरवीर री माइ ॥ धन० ८ ॥ षट लेश्या मांहे शुक्ल चडेरी, साधां में तीर्थंकरदेव री माइ। क्षेत्र विदेह सहु मांहे मोटो, शील व्रत छे जेमरी माइ ॥ धन० ९ ॥ राजा में चक्रवर्त्त मोटो, वनामें नंदन वनरी माइ। तरुवर में जिम सुरतरु मोटो, शीलव्रत गुण गेहरी माइ॥ धन० १० ॥ रथामें कृष्ण तणो रथ मोटो, सहस्र फणी नागकुमाररी माइ। ओपमा केता पार न आवे, संक्षेपे बत्रीस साररी माइ॥ धन० ११॥ उत्तराध्ययन अध्ययन सोलमें, शील तणो अधिकाररी माइ। संक्षेपे कर रचना कीधी, जिन गुण न आवे पाररी माइ ॥ धन० १२ ॥ सम्वत अठारे वर्ष गुणीयासे. भाद्रवा सुद मासरी माइ। शुक्ल पक्ष तिथि दशमी दिवसे. किधो प्रेम हुलासरी माइ। धन० ॥ १३ ॥ खरत्तर गच्छ शिरोमण सुंदर, हरखचन्द गुरुरायरी माइ।

शील की ३२ ओपमा

सूत्रश्री प्रश्न व्याकरणजी रा चौथे संवर द्वार में शील की ३२ ओपमा चाली छे सो कहे छे।

१—सर्व ग्रह नक्षत्र तारा के परिवार में चन्द्रमाजी मोटो नें प्रधान, ज्यों सर्व व्रतामें शीलव्रत मोटो नें प्रधान।

२—सर्व आगर में रत्नाकर आगर मोटो नें प्रधान, ज्यों सर्व व्रता में शील व्रत मोटो नें प्रधान।

३—सर्व रत्नकी जात में वैडूर्य नामा रत्न मोटो नें प्रधान, ज्यों सर्व व्रतामें शील व्रत मोटो ने प्रधान।

४—सर्व आभरण (आभूषण) में माथेरो मुकट मोटो नें प्रधान, ज्यों सर्व व्रतामें शील व्रत मोटो नें प्रधान।

५—सर्व वस्त्र में खेम युगल नामा कपास को

सर्व मोटो में प्रधान, ज्यों सर्व व्रता में शीलव्रत मोटो में प्रधान।

६—सर्व फूल की जातमें अरविंद नामा कमल को फूल मोटो में प्रधान, ज्यों सर्व व्रतामें शील व्रत मोटो में प्रधान।

७—सर्व काष्ठादिक री जातमें गोशीर्ष नामा बावना चन्दन मोटो में प्रधान, ज्यों सर्व व्रतामें शीलव्रत मोटो में प्रधान।

८—सर्व पर्वत में चूलहेम नामा पर्वत ओगणि करि मोटो में प्रधान, ज्यों सर्व व्रतामें शील व्रत मोटो में प्रधान।

९—सर्व नदी में सीता सीतोदा नदी मोटी में प्रधान, ज्यों सर्व व्रतां में शील व्रत मोटो में प्रधान।

१०—सर्व समुद्र में स्वयंभूरमण समुद्र मोटो में प्रधान, ज्यों सर्व व्रतामें शील व्रत मोटो में प्रधान।

११—सर्व पर्वत में रुचिक नामा पर्वत चूड़ी के

आकार मोटो नें प्रधान ज्यों सर्व व्रतां में शील व्रत मोटो नें प्रधान।

१२—सर्व हाथी में श्री शक्रेंद्र महाराज रो ऐरावण हाथी मोटो नें प्रधान, ज्यों सर्व व्रता में शील व्रत मोटो नें प्रधान।

१३—सर्व चौपदा में केशरीसिंह नामां सिंह मोटो नें प्रधान, ज्यों सर्व व्रतां में शील व्रत मोटो नें प्रधान।

१४—सर्व नागकुमारजी री जात में श्रीधर्णेद्रजी मोटो नें प्रधान, ज्यों सर्व व्रतामें शील व्रत मोटो ने प्रधान।

१५—सर्व सोवरणकुमारजी री जातमें वेणदेवजी मोटो नें प्रधान, ज्यों सर्व व्रतामें शील व्रत मोटो ने प्रधान।

१६—सर्व सभामें इन्द्र महाराज री पांचमी सुधर्मा सभा मोटी ने प्रधान, ज्यों सर्व व्रतांमें शील व्रत मोटो नें प्रधान।

१७—सर्व देवलोक में पांचमो देवलोक

ज्यों सर्व व्रतां में शील व्रत मोटो नें प्रधान।

२४—सर्व ध्यानमें शुक्ल ध्यान मोटो नें प्रधान, ज्यों सर्व व्रतांमें शील व्रत मोटानें प्रधान।

२५—सर्व ज्ञान में केवलज्ञान मोटो नें प्रधान; ज्यों सर्व व्रतां में शील, व्रत मोटो नें प्रधान।

२६—सर्व मुनिराज रे परवार में श्रीतीर्थङ्कर महाराज मोटा नें प्रधान, ज्यों सर्व व्रतामें शील व्रत मोटो नें प्रधान।

२७—सर्व क्षेत्र में महाविदेह क्षेत्र मोटो ने प्रधान, ज्यों सर्व व्रतामें शील व्रत मोटो नें प्रधान।

२८—सर्व पर्वत में मेरु नामां पर्वत ऊंच पणे मोटो नें प्रधान, ज्यों सर्व व्रतां में शील व्रत मोटो नें प्रधान।

२९—सर्व वन में नन्दनवन मोटो ने प्रधान, ज्यों सर्व व्रता में शील व्रत मोटो नें

रावज्यो । इण जुग दलपति थया छे दासक, आंख आणी किम उघड़े । मोड़े छे अंग करी मुख हांसक. इण जुग दास सम राखसी । वलि धन जोवन करे छे विणासक, नाम छे अवला नारनो । इन्द्र नरेंद्र कऱ्या सहु नासक, त्रिभुवन पाय लगावीया । निजर पड्यां करे शीलनो नासक, विषय वधावन पापणी । दुर तज्यां मिले शिव-पुर वासक. शील० ॥ ७ ॥

नारी रे कारण हुवा सवल संग्रामक. वड़ा वड़ा भुपत रह्या इण ठामक. कट २ मुवाजी अतिघणा। कुण २ नगरने कुण २ ग्रामक, कहुं छुं थोड़ीसीक वानगी । चित्तलगाय सुणो तेहना नामक, द्रोपदी रे परसंग थो । कृष्णजी पाड़ी पदमोतरनी मांमक, रावण सीताने अपहरी । भारत थाप्यो छे लिछमण रामक, रुक्मणीने पदमावती । कृष्णजी परण्या छे करी संग्रामक. उदाइ चंडप्रद्योतनें । ते पिण सुवर्ण गुलिकारे काजक. अर्जुन जुद्ध किया घणा । रतनभद्रा परणवारे काजक. शील० ॥८॥

विजय कुंवर विजयाकुंवरीका स्तवन

श्री वीतराग जिनदेव नमुं शीरनामी, कहुं शील तणो अधिकार सुगन जाय पामी। तीञ्जों कच्छ देश कुशुंवो नगरी जानी, पण दक्षिण देशमें प्रगट पणे वखाणी। तिहां सेठ तणा सुत विजय कुंवर वैरागी, सुण शील तणी महिमा मनमें लव लागी। तव हाथ जोड़ मुनिवर पे सोगन मांगी, हुवा मास एकमे कृष्ण पखना त्यागी॥ धन धन विजयकुंवरजी करी कमी कुछ नाहीं जी, जिण चित्त चोक्खे कर शील आदर्यो भर जोवन के माहींजी॥ १॥

शुद्ध पाले श्रावक धर्म ज्ञान सुख उच्चरे, पापा प्रतिक्रमणा संवर कर कर विचरे। कर दान दया संतोष शील शुद्ध पाले, वह बाल ब्रह्मचारी आत्म कुल उजवाले। शुद्ध समकित धारी शंका कंखा न आणे, परपाखंडी रो परचो

दिक्षा। सुवे एकण सेज्यां सुन्दर और शाई, वेठा वतलावे वहिन अने ज्युं भाइ ॥ धन० ॥ १३॥

वेहु वीरीयां करे पडिक्कमणो ने समाई, कर दान शीयल तप भली भावना भाई। इम वारे वरस हुवा इमज करतां, तव वात विस्तरी शील पणे वीचरतां। त्यां विजय कुंवरने विजया कुंवरी केरा, श्री विमल केवली किया वखाण घणेरा। सुवे एकण सेज्यां शील निर्मलो पाले, वेहु बाल ब्रह्मचारी आतमको उजवाले। वेहु चरम शरीरी छे महा उत्तम प्राणी, सुण अचरज पाया सुणी केवली मुख वाणी ॥ धन० १४॥

जिनदास श्रावकने सुपनेमें मुनिवर दीठा, चोरासी सहस्त्र मुनीसर लाग्या मीठा। निरदोषण आहार हार्थो हरख वेराया. जागीने देखे मुनिवर एक न पाया। श्री विमल केवली पासे प्रश्न पूछे, कहोजी प्रभुजी इण सुपनेको फल शुं छे। आ वात अछत्ती भाव तुमारा होशी.

जीसो कारज नहीं करीये। घर सारू दान शील तप भली भावना भावो, शुद्ध शील पालकर लेवो मनुष्य जन्मको लावो। आठम चवदश पांचे पर्वी टालो, शक्ति होवे तो शील सर्वदा पालो ॥ धन धन० ॥ २२ ॥

ये ग्रन्थ देखने गुण विजय कुंवरना किया, अधिके ओछेना मिच्छामि दुक्कडं लीया। जयणा मुख वाच्यां होसी गुण अति भारी, अजयणा वाच्यां उल्टी होसी ख्वारी। मुज उपगारी था दोलतरामजी स्वामी, गुण ग्राम किया ऋषि लालचन्दजी सिरनामी। सम्वत अठारेसे इकसठे अवसर पाया, श्री कोटे के रामपुरे गुण गाया धन धन० ॥ २३ ॥

॥ इति विजयकुंवर विजयकुंवरी का स्तवन सम्पूर्ण ॥

॥ दोहा ॥

तजो कथा नारी तणी, भली बुरी संसार।
कथा कहे जो नारी की, जाय विरति निर्धार॥

—:•:—

(३) तीजीवाड़—ब्रह्मचारीजी स्त्री के आसण ऊपर बेसे नहीं, जो वैसे तो घी रे घड़े ने अग्नि रो दृष्टांत।

॥ दोहा ॥

तजो संग नारि तणो, मति को राचो रंग।
एक ही शय्या बैठतां, होय व्रत को भंग॥

—:•:—

(४) चौथीवाड़—ब्रह्मचारीजी स्त्री रा अंग ऊपांग निरखे नहीं, जो निरखे तो आंख री काचीकारी नें सूर्य्यको दृष्टांत।

॥ दोहा ॥

रङ्ग पतङ्ग है नारी को, जैसा संन्ध्या को वान।
मूर्ख मन लवल्या लगी, धरे निरन्तर ध्यान॥

—:•:—

जो थे रहतो संसारमेंजी. तो हूं छु तांहरी नार। जो थे संजन आदरोजी. तो हुं माहालतीयां री लार ॥ सो० ॥ र० ॥ ४२ ॥ मानसरवररो हंसलो जी, नगर वारे किम जाय। दान बीजोरा मेवा तजीजी. म्हारे नींबोली कुण खाय ॥ सो० र०॥ ॥४३॥ अमृत वचन श्री बाइ राजी. सांभलोया रतनकुंवार। दंपती सञ्जम आदरयोजी. जाण्यो अथिर संसार ॥ सो० ॥ र० ॥ ४४ ॥ नेमजिसुंदरी ओपनाजी, श्रीरतन कुंवर गुणसार। श्री राजल राणी री ओपनाजी. श्रीबाई गुणधार ॥ सो० ॥ र० ॥ ४५ ॥ इतरन छोड़ संजम आदरयोजी. दुखनी आरे माय। तोपण भारी करमा जीवनेजी. साधु नहीं आविदाय ॥सो०र० ॥४६॥ पुग पुण्य ज्यांरा खुलीयाजी. सेव्या साधु निगरंथ। क्रोध कषाय दूरा मूकनें जी. पाया मुक्ति रो पंथ ॥ सो० ॥ र० ॥ ४७ ॥ सोलमी ढाल सुहामणी जी. श्रीरतन गुण अमोल। सांभलता रङ्ग उपजे जी. आण्यो जैन तंबोल ॥ सो० ॥ र० ॥ ४८ ॥

। इति श्रीरतनकुंवर की सज्झाय सम्पूर्ण ।

ढाल पहली

(हमीरीयारी एदेशी)

जंबूद्वीप रा भरतमें, सुदरसणपुर अभिराम सनेही। न्याय गुणे करि निरमलो, अरि मरदन नृप नाम सनेही ॥ १ ॥ शील तणी महिमा सुणो, एक मना नर नार स०। इणभव परभव सुख लहे, वरते जय जयकार स० ॥२॥ शी० ॥ पुफदंत सेठ तिहां वसे, सत्यसिरी नामे नार स०। तेहने सुत दोय दीपता, सागरदत्त चित्रसार स० ॥ ३ ॥ शी० ॥ जोवन वय आयां थकां, सागरदत्तने तिण पुर माय स०। धनवंत सेठ तणी सुता, रूपसुंदरी दी परणाय स०॥४ शी०॥ वसंतपुरी जिनदत्त वसे, धनश्री नार उदार स०। बेटी तिलोकसुंदरी, सा परणी चित्रसार स० ॥ ५ ॥ शी० ॥ सुख भोगवे संसारना, भायांरे घणो प्यार स०। माता पिता

दोहा।

अरु वरु आइ कहे, चित लाई धर नेह।
मनचाइ लीला करो, जोबन लावो लेह ॥ १॥
गेणादिक मांगे जिके, हाजर करुं तयार।
हुं छु किंकर ताहरो, तुं मुझ प्राण आधार ॥ २ ॥
जेठ वचन सुण सुंदरी, कीधो कोप करूर।
परणी वंछे पारकी, फिट पागड़में धूड़ ॥ ३ ॥
सती निभंछयो जेठनें, रती न मानी कुजात ॥
कथी जाय आरचनें, भ्रातवधुनी वात ॥ ४ ॥
रूप प्रशंसा सांभली, कोटवाल तिणवार ॥
सती बोलावी ने कहे, कर मोसुं इकतार ॥५॥
सती नाकायों तेहनें ॥ फिटकायों सो वार।
डाकण आल दोहुं देइ, गाडी पुरे वार ॥६॥

वाल भले भखे आ म्हारो। तो वेगी काढो घर-
वारो ॥ सु० ॥ ५ ॥ एतले सती ऊठ जागे।
हाड मांस पड्या मुख आगे ॥ सु० ॥ देख आ
मनमें विमासे। भावि लिख्यो जिम थासे ॥ सु०
॥ ६ ॥ हिवे सेठ कहे बुलाई। इण घर सुं जावो
बाई ॥ सु० ॥ सुण वात हुइ दिलगीर। इणरे
नेणा ठलक्या नीर ॥सु० ७॥ तुमसुं जोर नहीं
तात। थांरा खुसी पणारी वात ॥ सु० ॥ सेठरी
छाती भराई। राख्यां रीत रहे नहीं कांई ॥सु०॥
॥ ८ ॥ सहस मोरां पकड़ाई। सती चाल बाजा-
रमें आई ॥ सु० ॥ पूज सबलदासजी कहे सुणो
प्यारा। भाई पापसुं हुयजो न्यारा ॥ सु० ६ ॥

दोहा।

स्त्री-चंपक सेठरे, धरणा दीनो आय।
मांगे मोरा पांचसे, नहीं इणरे घर मांय ॥१॥
लोकां मिल समझाविया, पिण नहीं माने तेह।
अवसर देख सती तदा, वदे वचन धर नेह ॥

तुमनें आपुं केम हो ॥ कां० ॥ ४ ॥ छेवट रहे नहीं ताहरे । क्युं खोवे दाम निकाम हो ॥कां०॥ द्रव्य दस सहस आपसुं । सुण लोभ व्याप्यो चित तांम हो ॥ कां० ॥ ५ ॥ चंपक देवण त्यारी हुवो । तरे सती दृखे कर जोड़ हो ॥ कां० ॥ थे मोल लेवो किण कारणे । तद नायक बोले धर कोड हो ॥ कां० ॥ ६ ॥ दूजी वंछना नहीं माहरे । देखी चतुराइ तुझ हाथ हो ॥ कां० ॥ रसोई कारण मोलवुं । ए मुझ मन री वात हो॥कां०॥ ॥ ७ ॥ दांम देइ ले चालियो । विणजारो धर नेह हो ॥ कां० ॥ कृतघन रा पाप सुं । चंपक कोढी हुवो तेह हो ॥ कां० ॥ ८ ॥ आयो दरीयाव ज्याज घेसनें । चाल्यो कितनिक दूर हो ।कां०। पतो विषय रस मोहियो । आयो सती हजूर हो ॥ कां० ॥ ६ ॥ मन मेल तुं मुझ थकी । करो लील विलास हो ॥ कां० ॥ जोवन गमावे क्युं बावली । हुं थारो दासानुदास हो ॥ कां० ॥१०॥ रूप लावण लखणे करी । तुं अपछर रे उणी-

वैद्य मांन नृपनो वचन, कर उपचार विसेस ।
नृप रांणी ताजा कीया, हरप्या लोक असेस ॥३॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥

(ललकरीयानी ए देशी)

—:○:—

वैद्य गुणे नृप रिझीयो हो । राजन जी । दीया
रहणने महल । भलांहि पधारया हो उपगारी ॥
हुवे नाटक मुख आगले हो ॥ रा० ॥ करे मन
मांनी सहिल ॥ भ० ॥ १ ॥ करी सगाई याई
नरी हो ॥ रा० ॥ चोखे लगन जोवाय ॥ भ०॥
धवल मंगल गावे गोरड़ी हो ॥ रा० ॥ आंण
उमंग मन माय ॥ भ० ॥ २ ॥ केसरीयो बनड़ो
बन्यो हो ॥ रा० ॥ तुरा किलंगी रसाल ॥ भ०॥
गय जादा जांनी घणा हो ॥ रा० ॥ मानी चड़ा
महराल ॥ भ० ॥ ३ ॥ हाथी घोड़ांरा थाटसुं हो
॥ रा० ॥ तोरण बांधो आय ॥भ०॥ विध सम्रट
माधवी हो ॥ रा० ॥ वनो बनी दीपा परताप

पिण निजरां नहिं पेखीयो हो ॥ सुं० ॥ प्रीतम प्राण आधार ॥ भ० ॥ १० ॥ इम करतां रहतां थकां हो ॥ सुं० ॥ वीतो कीतोयक काल ॥भ०॥ हिवे दंपति मिले हो ॥ सुं० ॥ ते सुणो थान रसाल ॥ ११ ॥

दोहा ।

लघु बंधु लिख भेजीयो, ज्येष्ठ बंधुनें पत्र ।
[illegible]जादा पुत्र भई, आवो वेगा अत्र ॥ १ ॥
समाचार पाछो दीयो, नहीं आवणरो ढंग ।
रोग उपनो सोळमो, तिण सुं देह बिरंग ॥ २ ॥
रोग सोग हि सुने, आवो धर्णी उमंग ।
राय जनाइ वेग है, नाजो करमी संग ॥ ३ ॥
कोटवाल भाई तिणे, चाल्या है तिण वार ।
तिणनें लिख्यो गुमानसो, [illegible] ॥ ४ ॥
[illegible] पावसा, [illegible] तिलोंपा [illegible]
[illegible] भाई तिहा, [illegible] ॥ ५ ॥

सो करूं प्रणाम ॥ स० ॥ ५ ॥ नृप कहे रहो किण जायगा जी कांइं ॥ नृ० ॥ देव रमण हो पुर सहिररे मांय, उहां रेवास छे माहरो. सेठ बोल्यो हो इम सीस नमाय ॥ स० ॥ ६ ॥ आलां जद उण मारगे जी कांई ॥ आ० ॥ नद लेसां हो तुझ बंधव देख. सीख दीधी कर खातरी इण बातरी हो नहीं जेज विसेस ॥स० ॥ ७ ॥ कर मसवारी नीसर्या जी कांई ॥ क० ॥ दिन डूबे हो बनण नें सेल. बाग बगीचा जायने पाछा फिरता हो आया इण गेल ॥ स० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

गयसुता पति आवतो. देखी हरख्यो मन।
सेठ कहे किरपा करी. आज दिहाड़ो धन ॥१॥

॥ ढाल ॥ ८ ॥

(एक दिवस लंकापति. ए देशी)

रथनुं हेठा उतरी। मन मांहे उमंग धरी।
हरख भरी आया दुकानें सेठनी ए ॥ १ ॥ पग

॥ दस दृष्टांते नरभव दुर्लभ, पांमीने मत हारो रे लो। विषय कषाय तृष्णा लोभ, विकथा पाप निवारो रे लो ॥ ध० ॥ ११ ॥ सुण उपदेश वैराग मन आंणी, चित्रसार नें दोनु नारी रे लो। घररो भार सुंपी निज सुतनें, लीधो संयम सुखकारी रे लो ॥ ध० ॥ १२ ॥ पंच आचार महाव्रत पाले, दोषण सगलाई टाले रे लो। तप जप संयम सुध आराधे, आतम गुण उजवाले रे लो ॥ ध० ॥ १३ ॥ कर अणसण उपना देवलोके, महर्द्धिक पदवी पाई रे लो। लहि नरभव नें कर्म खपावी, मुगति जासी मुनिराई रे लो ॥ ध० ॥ १४ ॥ शील उपदेश थी ए विस्तारयो, पूज सवलदासजी चित्त लायो रे लो। ओछो इधको आयो हुवे तो, मिच्छामि दुक्कड़ थायो रे लो ॥ ध० ॥ १५ ॥ अष्टादस सो बाणवे वरसे, कीयो फलवधी चोमासो रे लो। शीलरी महिमा ... २० जिण लील विलासो रे लो ॥ध

॥ इति श्रीतिलोकसुंदरी रो

भर जोबने आइ तदा, सावी विजय कुंवार ॥२॥
आरम कारम सहुकरथा, वीहाव कीयो तिणवार।
जैसी विजया सुंदरी, जैसा विजय कुंवार ॥३॥

॥ ढाल ॥ २ ॥

(॥ भवदेवे जागी मोहणी ॥ एहनी देशी ॥)
सज सोलै सिणगार, भला जी कांइ आय उभी हो रंग महेल मझार। नयण वयण स्त्रीया मोहणी, आय उभा हो श्रीविजय कुमार ॥ १ ॥ सुणज्योजी शील सुहामणो ॥ ए आंकड़ी ॥ कंत कहे भले आवीया, दिन तीनज हो नहीं आवणजोग। स्युं कारण कहे सुन्दरी, इण अवसर हो किम वरजो छो आज ॥ सु० ॥ २ ॥ कृष्ण पत्त वरत में लीया, इम सुणी हो आ थइरे,उदास। सुक्ल पत्त व्रत मैं लीया, दुजी परणों हो मांडो घरवास ॥ सु० ॥३॥ विजय कुंवर कहे हे सुन्दरी, सेजे मिटियौं हो अनर्थनो मूल। जावजीव व्रत पालसां, नर मुरख हो रह्या छे भूल ॥ सु० ॥ ४ ॥ काम भोग वहुभोगीया, वले भोगवीया हो अनन्ती